फुर्र, फुर्र

एक जुलाहा सूत कातने के लिए रूई लेकर आ रहा था। वह नदी किनारे सुस्ताने के लिए बैठा ही था कि ज़ोर की आँधी आई। आँधी में उसकी सारी रूई उड़ गई। जुलाहा घबराया। "अगर बिना रूई के घर पहुँचा तो मेरी पत्नी तो बहुत नाराज़ होगी।" घबराहट में उसे कुछ न सूझा। उसने सोचा, "यही बोल दूँगा– *फुर्र, फुर्र।*" और वह 'फुर्र-फुर्र' बोलता जा रहा था। आगे एक चिड़ीमार पक्षी पकड़ रहा था। जुलाहे की फुर्र-फुर्र सुन कर सारे पक्षी उड़ गए। चिड़ीमार को बहुत गुस्सा आया। वह जुलाहे पर बहुत चिल्लाया, "तुमने मुझे बरबाद कर दिया। आगे से तुम ऐसा कहना, *पकड़ो! पकड़ो!*"

जुलाहा ज़ोर-ज़ोर से "पकड़ो! पकड़ो!" रटता गया। रास्ते में कुछ चोर रुपए गिन रहे थे। जुलाहे की "पकड़ो! पकड़ो!" सुन कर वे घबरा गए। फिर उन्होंने देखा कि अकेला जुलाहा ही चला आ रहा था। चोरों ने उसे पकड़ा और फिर गुर्राते हुए कहा, "यह क्या बक रहे हो? हमें मरवाने का इरादा है क्या? तुम्हें कहना चाहिए, *इसको रखो, ढेरों लाओ* ,समझे?"

जुलाहा यही कहता हुआ आगे बढ़ गया, "इसको रखो, ढेरों लाओ।" जब वह श्मशान के पास से गुज़र रहा था तो वहाँ गाँव वाले शवों को जला रहे थे। उस गाँव में हैजा फैला हुआ था। लोगों ने जुलाहे को कहते सुना, "इसको रखो, ढेरों लाओ," तब उन्हें बड़ा गुस्सा आया। वे चिल्लाए, "तुम्हें शर्म नहीं आती?" "हमारे गाँव में इतना भारी दुख फैला है और तुम ऐसा बकते हो। तुम्हें कहना चाहिए *यह तो बड़े दुख की बात है।*"

जुलाहा शर्म से पानी-पानी हो गया। वह यही रटता हुआ आगे बढ़ने लगा, 'यह तो बड़े दुख की बात है।' कुछ देर बाद वह एक बारात के पास से गुज़रा। बारातियों ने उसे यह कहते हुए सुना, "यह तो बड़े दुख की बात है, यह तो बड़े दुख की बात है।" इतना सुनकर वे जुलाहे को पीटने के लिए तैयार हो गए। बड़ी मुश्किल से जुलाहे ने सफाई दी तो उन्होंने कहा– "सीधे से आगे बढ़ो, और हाँ, अब तुम यह रटते जाना– *भाग्य में हो तो ऐसा सुख मिले।*"

अब जुलाहा यही रटता हुआ अपनी राह चल पड़ा। चलते-चलते अंधेरा हो गया। घर से निकलते

समय उसकी पत्नी ने उससे यही कहा था कि "जहाँ रात हो जाए वहीं सो जाना।" जुलाहा थक भी गया था। वह वहीं सो गया।

अगले दिन जब सुबह उसके मुँह पर गरम पानी पड़ा तब जुलाहा हड़बड़ा कर उठा। आँखें खोली तो देखता ही रह गया– यह तो उसी का घर था! और अभी-अभी उसकी पत्नी ने ही उस पर चावल का गरम पानी फेंका था। जुलाहे के मुँह से निकला, "भाग्य में हो तो ऐसा सुख मिले।"

अभ्यास

इन प्रश्नों के उत्तर दो–

1. 'क' स्तम्भ में लिखे व्यक्तियों से क्या कहने के कारण जुलाहे को डाँट पड़ी? 'ख' स्तम्भ से जोड़ी मिलाओ।

'क'	'ख'
बाराती	'इसको रखो, ढेरों लाओ'
चिड़ीमार	'फुर्र-फुर्र'
चोर	'यह तो बड़े दुख की बात है'
गाँव वाले	'पकड़ो-पकड़ो'

जोड़ी मिलाने के बाद इन्हें सही क्रम में लिखना।

2. चिड़ीमार ने क्यों कहा – 'तुमने मुझे बरबाद कर दिया'?
3. इस कहानी में तुम्हें कौन सी बातें अच्छी लगीं और क्यों?
4. नीचे दिए गए वाक्यों में कुछ शब्दों के नीचे लाइन खिंची है। पाठ में इन वाक्यों को ढूँढ कर पता करो कि ऐसा हर शब्द किसके बारे में लिखा गया है। उस व्यक्ति का नाम लिखकर वाक्य फिर से पढ़ो। कहानी में ऐसे और भी शब्द ढूँढो।

हर बार किसी का नाम लेने के बजाय हम 'उसे', 'वह', 'हमें' जैसे शब्दों का इस्तमाल करते हैं। इससे बात कहने लिखने में आसानी होती है। ।

क. <u>उसे</u> डर था कि कहीं भूल न जाऊँ।

ख. चिड़ीमार को गुस्सा आया, <u>वह</u> जुलाहे पर चिल्लाया।

ग. <u>उन्होंने</u> देखा कि जुलाहा अकेला चला आ रहा है।

घ. हमारे गाँव में दुख फैला है और <u>तुम</u> ऐसा कहते हो।

ङ. इतना सुनकर वे जुलाहे को पीटने को तैयार हो गए।

च. यह तो उसी का घर था।

5. कहानी में एक मुहावरा रेखांकित किया गया है। उसका क्या अर्थ है? इस मुहावरे से कम से कम तीन वाक्य बनाओ।

6. गाँव वालों ने ये क्यों कहा, 'तुम्हें शर्म नहीं आती?'

7. इस कहानी का नाटक खेलो।

इन चित्रों को क्रम में जमाओ

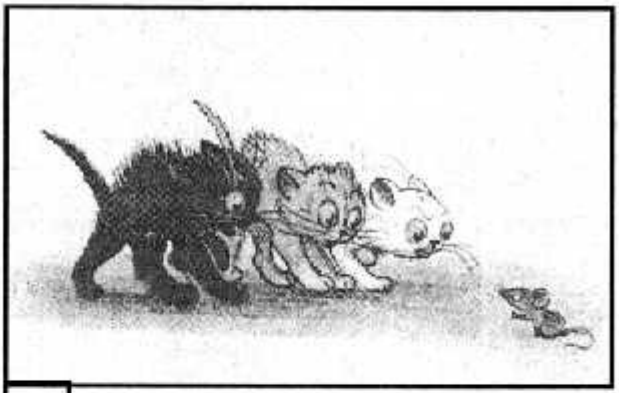

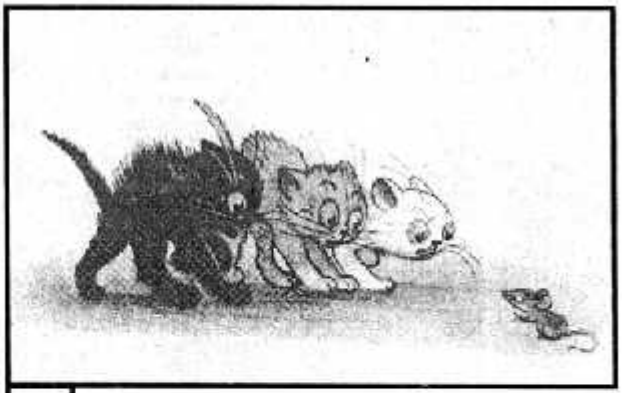

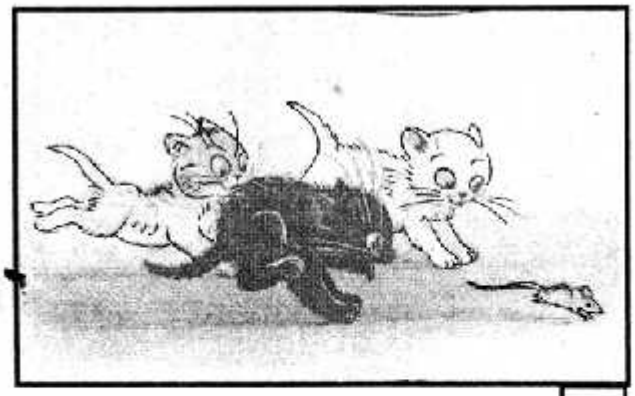

क्या तुम मेरी अम्मा हो?

एक बार एक चूज़ा जब अपने अंडे से निकला तो उसकी मां वहां पर नहीं थी। उसे अपनी मां कहीं दिखी ही नहीं।

चूज़ा उठ कर अपनी मां को ढूंढने चला। पहले पहले तो उसके कदम लड़खड़ा रहे थे, पर धीरे-धीरे संभल गये।

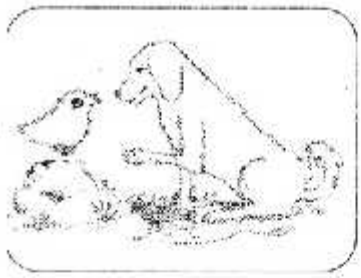

कुछ दूर पर जा कर चूज़े को एक कुत्ता मिला।
कुत्ते को देखकर चूज़े ने कहा- क्या तुम मेरी अम्मा हो?

कुत्ते ने कहा - नहीं, मेरे तो चार पैर हैं। तुम्हारी अम्मा के तो सिर्फ दो पैर हैं।

चूज़ा आगे बढ़ा। एक मोड़ पर जा कर उसे एक लड़का मिला।
चूज़े ने कहा - तुम्हारे तो दो ही पैर हैं। ज़रूर तुम ही मेरी अम्मा हो।

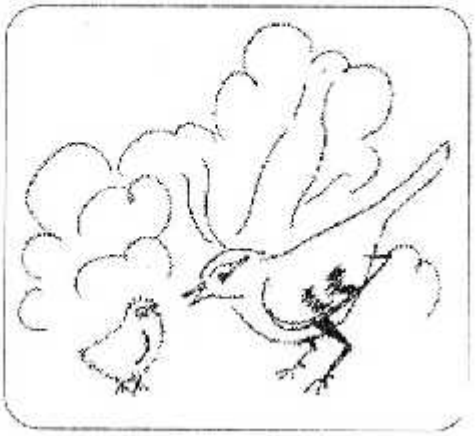

लड़के ने कहा - नहीं नहीं, मेरे तो पंख ही नहीं हैं। तुम्हारी अम्मा के तो दो पंख हैं।

चूज़ा आगे बढ़ा। एक पेड़ के पास उसे एक काला कबूतर मिला। चूज़े ने कहा - अहा, तुम्हारे तो दो पैर और दो पंख हैं। ज़रूर तुम ही मेरी अम्मा हो।

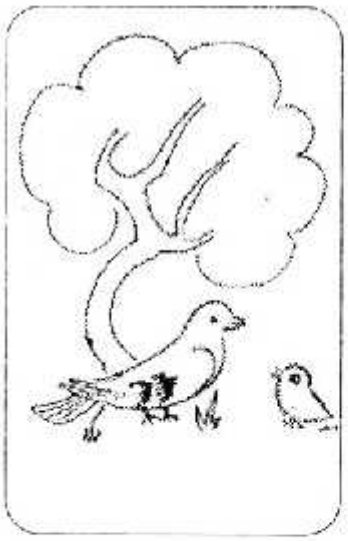

पर काले कबूतर ने कहा- मेरी चोंच तो स्लेटी रंग की है। तुम्हारी मां-की तो पीली भूरी चोंच है।

चूज़ा आगे बढ़ा। रायमुनैया की एक झाड़ी के पास उसे एक मैना मिली।

चूज़े ने कहा- तुम ही हो मेरी अम्मा। तुम्हारी पीली भूरी चोंच है, दो पंख हैं, दो पैर हैं। ज़रूर तुम ही हो मेरी अम्मा।

पर मैना ने कहा - नहीं नहीं, मैं तो मैना हूं। तुम्हारी अम्मा मुझसे काफी बड़ी है।

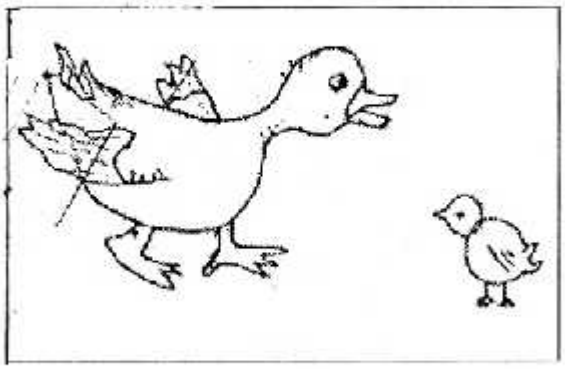

चूज़ा फिर से आगे बढ़ा। एक पानी के डबरे में उसे दिखी बत्तख। चूजा बहुत खुश हुआ। चिल्लाया - मिल गई।

तुम ही हो मेरी अम्मा। मैना से बड़ी हो, तुम्हारी पीली भूरी सी चोंच है, दो पंख हैं, दो पैर हैं।

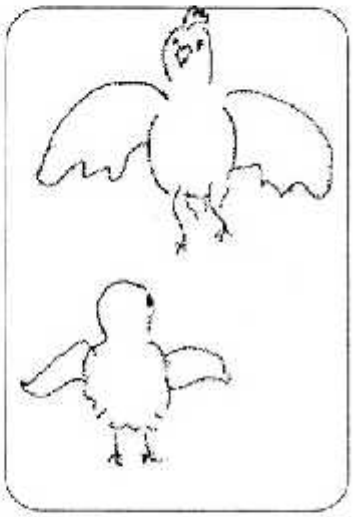

पर बत्तख ने कहा - क्वैक क्वैक, नहीं नहीं, मैं तो बत्तख हूं। मैं बोलती हूं क्वैक क्वैक, और तुम्हारी मां तो कौं-कौं-कौं बोलती है।

बेचारा चूज़ा बहुत निराश हुआ। उसकी आंखों से आंसू निकलने लगे। तभी आवाज़ सुनाई दी - कौं-कौं-कौं।

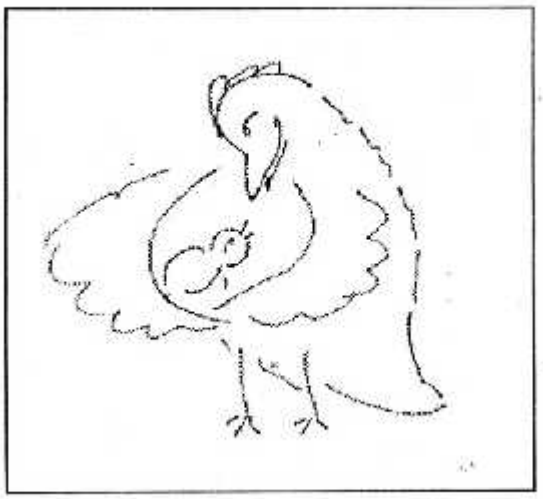

चूज़े ने देखा कि जो कौं..कौं..कौं की आवाज़ निकाल रही थी, वो मैना से बड़ी थीं, उसके पीली भूरी चोंच थी, दो पंख थे, दो पैर थे।

वो दौड़ा-दौड़ा उसके पास गया और बोला - तुम ही मेरी अम्मा हो ना?

मुर्गी ने उसे अपने पंखों में समेटते हुए कहा - हां, मैं ही तुम्हारी अम्मा हूं।

.....

नीचे यही कहानी दी हुई है। उसे देखो:

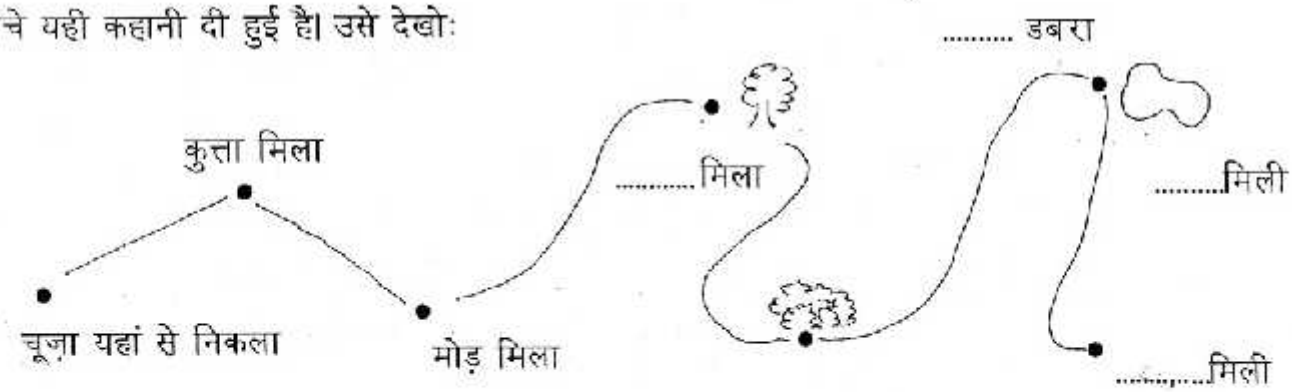

● क्या तुम भी ऐसी कहानी बना सकते हो?

नीचे के नक्शे की मदद से बगुले की कहानी आगे बढ़ाओ

एक बार जब एक चूहे के बच्चे की आंख खुली तब उसकी मां उसके पास नहीं थी। वह घबरा कर अपनी मां को खोजने निकल पड़ा। कुछ दूर पर उसे एक मछली मिली -

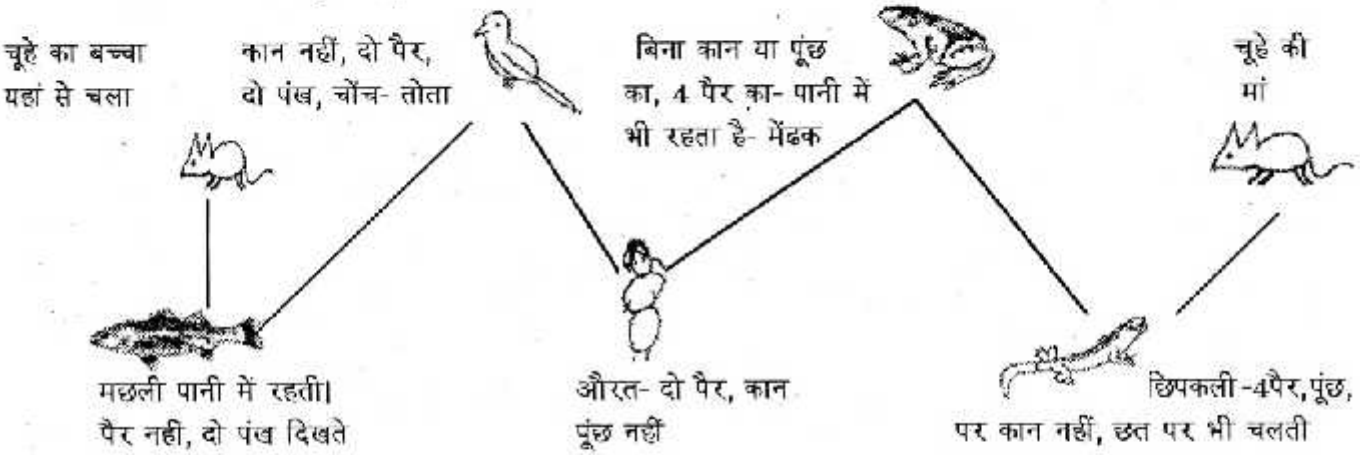

.....

● देखो मैंने कछुए के बारे में कुछ बातें लिखी हैं-

पानी में रहता
चार पैर का
कड़ी पीठ का
धीरे-धीरे चलता

अब मैं कछुए के बारे में एक पैराग्राफ लिखता हूं

कछुआ पानी में रहता है। उसके चार पैर होते हैं।
वह धीरे-धीरे चलता है। उसकी कड़ी पीठ होती है।

● नीचे छिपकली के बारे में कुछ चीजें लिखी हैं

पीले रंग की
दीवार पर चलती
कड़ी पूंछ हिलाती
.....
.....

अब तुम्हारी बारी है, छिपकली के बारे में पैराग्राफ लिखो

● *इस कहानी को छोटा कर के (इसका सार) यहां लिखा है। पढ़कर बताओ कौन सा सही है।*

1. एक चूज़ा अपने अंडे से निकला। उसकी मां उसे दिखाई नहीं दी। वह उसे ढूंढने निकला। पास ही एक पेड़ के नीचे बैठी उसको अपनी अम्मा मिल गई। चूज़े की अम्मा ने उसे अपने पंख में समेट लिया।

2. एक चूज़ा अपनी अम्मा को ढूंढने निकला। रास्ते में कई लोग मिले– कुत्ता, लड़का, कबूतर, मैना, बत्तख। चूज़े ने सबसे पूछा– क्या तुम मेरी अम्मा हो? पर सबने मना कर दिया। इन सबसे मिलकर चूज़े को पता चला कि उसकी अम्मा के दो पैर, दो पंख, पीली–भूरी चोंच है और वह कौं–कौं करके बोलती है। काफी देर ढूंढने के बाद उसे ऐसी ही एक चीज़ दिखी जो कौं–कौं बोल रही थी। चूज़ा झट पहचान गया कि यही उसकी अम्मा है।

● टोली बनाकर इस कहानी का नाटक खेलो।

● चूज़ा अंडे से निकलता है। क्या कुत्ता भी अंडे से निकलता है? पता करो कि और कौन–कौन से जीव चूज़े के समान अंडे से निकलते हैं और कौन से नहीं।

● **तालिका भरो** – कहानी में कौन–कौन से जीव आए हैं? उनके नाम लिखो और उनके बारे में तालिका में पूछी गई चीज़ें भरो। और भी जीवों के नाम लिखकर उनके बारे में कापी में तालिका बना कर लिखो।

जीव का नाम	कितने पैर	रंग	पंख	कैसी आवाज़?	क्या खाता/खाती

● कहानी में दिए चित्रों में जो दिख रहा है, उनके नाम लिखो।

● इस कहानी के आधार पर बताओ कि मुर्गी कैसी होती है? (बोलकर और लिखकर)।

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

♣ **कहानी में देखकर खाली स्थान भरो–**

1. कुछ दूर जाकर चूज़े को ——— मिला। 2. कुत्ते को देखकर — — ने कहा।

3. वह मैना से — — थी।

♣ **गलत अंशों को सुधारो और नीचे लिखो-**

एक चूजा अपनी अंडा से निकली। उसका माँ उस दिखाई नहीं दी। वह उसे ढूँढने निकली। पास ही एक पेड़ के नीचे बैठा उसकी अम्मां मिल गई। चूज़े के अम्मां ने उसे अपने पंख में समेटा लिया।

——————————————————————————

——————————————————————————

——————————————————————————

♣ **कहानी में चूज़े को जो-जो मिला उसमें और चूज़े में क्या-क्या अन्तर थे।**

नाम	समानता	अन्तर
कुत्ता	दो आँखें	

♣ ***तुम*** मेरी अम्मां हो । ***तुम्हारी*** दो टाँगे हैं।
मैं तुम्हारी अम्मां नहीं। ***मेरी*** स्लेटी चोंच है।

अब इनसे तुम वाक्य बनाओ–

हम– ———————————— *हमारी*,– ————————————

आप– ———————————— *आपकी*,– ————————————

वह– ———————————— *उसकी*,– ————————————

तुम– ———————————— *तुम्हारी*,– ————————————

वे– ———————————— *उनकी*– ————————————

♣ **जो शब्द किसी चीज़ के बारे में बताते है** कहानी में से और ढूँढकर लिखो जो सुनते हो वह भी लिखो।

जैसे– ***चार*** पैर —————— ——————

दो पैर —————— ——————

दो पंख —————— ——————

स्लेटी चोंच —————— ——————